साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 6, अंक : 12 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 11 नवंबर से 17 नवंबर 2020 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

दिवाली पर रोशनी के साथ पर्यावरण भी शुद्ध करेंगे गोबर से बने दीये

प्रदूषण के खतरनाक जोन में चल रहे मुरादाबाद वासियों के लिए एक अच्छी खबर है। इस दिवाली इको फ्रेंडली गाय के गोबर के दीये वातावरण शुद्ध करेंगे और उजियारा भी फैलाएंगे। मुरादाबाद ही नहीं प्रदेश के नोएडा, आगरा, बरेली समेत कई जिलों से इन दीयों की मांग आ रही है। मनोहरपुर के एग्री क्लीनिक एग्री बिजनेस सेंटर में ये तैयार किए जा रहे हैं। इन दीयों की खासियत है कि जब इनको दीपावली पर जलाया जाएगा तो पहले बत्ती और तेल जलेगा इसके बाद गोबर का दीपक भी जल जाएगा। इससे न सिर्फ उजियारा होगा बल्कि गाय के गोबर से तैयार इको फ्रेंडली दीये वातावरण भी शुद्ध करेंगे।

यही नहीं इन जले हुए दीपकों की राख को पेड़ पौधों में डाला जा सकता है। इस राख का इस्तेमाल खाद की तरह किया जा सकता है। मुरादाबाद के मनोहरपुर गांव स्थिति एग्री क्लीनिक एग्री बिजनेस सेंटर में डा. दीपक मेंहदीरत्ता ने मशीन से इन दीयों को तैयार करवाया है। उन्होंने बताया कि इन पर्यावरण मित्र दीपकों की मांग मुरादाबाद ही नहीं कई जिलों से आ रही है वह आर्डर पूरे नहीं कर पा रहे हैं। तकरीबन बीस हजार दीपक अभी तक बिक चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के दीपक से वातावरण शुद्ध होगा। यह अभिनव प्रयोग काफी कारगर है। मुरादाबाद प्रदूषित शहरों के टॉप शहरों में है। ऐसे में लोग विशेष मौकों पर परंपरागत तरीकों में कुछ बदलाव करके पर्यावरण संरक्षण में योगदान कर सकते हैं।

ढाई रुपए का एक दीपक, मशीन से एक बार में दस होते हैं तैयार

तैयार एक दीपक ढाई रुपए में बिक रहा है। एक बार में मशीन से एक मिनट में दस दीपक तैयार होते हैं। इस तरह लगातार दीपक बनाने का सिलसिला चल रहा है। लगातार इनका निर्माण किया जा रहा है। जिससे ज्यादा से ज्यादा आपूर्ति की जा सके। मुरादाबाद के पांच सौ लोगों ने आर्डर किया हुआ है जिसमें हर दिन बढोत्तरी हो रही है।

ऐसे तैयार किया जाता है दीपक

एक किलो गाय के गोबर में 100 ग्राम मुल्तानी मिट्टी मिलाई जाती है। 200 ग्राम ग्वार गोंद या मक्के का स्टार्च भी मिलाया जाता है। इसके बाद मशीन में मैटीरियल डाल कर दीपक तैयार किया जाता है। इसके निर्माण में किसी तरह की हानिकारक सामग्री का इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

कन्नौज और रामपुर की महिलाओं को ट्रेनिंग दी

एग्रीक्लीनिक एग्री बिजनेस सेंटर से कन्नौज और रामपुर की महिलाओं को गाय के गोबर से दीपक बनाने की ट्रेनिंग भी दी गई है। कन्नौज में भी इस तरह के दीप बनाकर महिलाएं बेच रही हैं। रामपुर में इस साल ट्रेनिंग लेने वाली महिलाओं ने दीपक नहीं बनाए हैं। दिवाली पर रोशनी के साथ पर्यावरण भी शुद्ध करेंगे गोबर से बने दीये

प्रदूषण के खतरनाक जोन में चल रहे मुरादाबाद वासियों के लिए एक अच्छी खबर है। इस दिवाली इको फ्रेंडली गाय के गोबर के दीये वातावरण शुद्ध करेंगे और उजियारा भी फैलाएंगे। मुरादाबाद ही नहीं प्रदेश के नोएडा, आगरा, बरेली समेत कई जिलों से इन दीयों की मांग आ रही है। मनोहरपुर के एग्री क्लीनिक एग्री बिजनेस सेंटर में ये तैयार किए जा रहे हैं। इन दीयों की खासियत है कि जब इनको दीपावली पर जलाया जाएगा तो पहले बत्ती और तेल जलेगा इसके बाद गोबर का दीपक भी जल जाएगा। इससे न सिर्फ उजियारा होगा बल्कि गाय के गोबर से तैयार इको फ्रेंडली दीये वातावरण भी शुद्ध करेंगे।

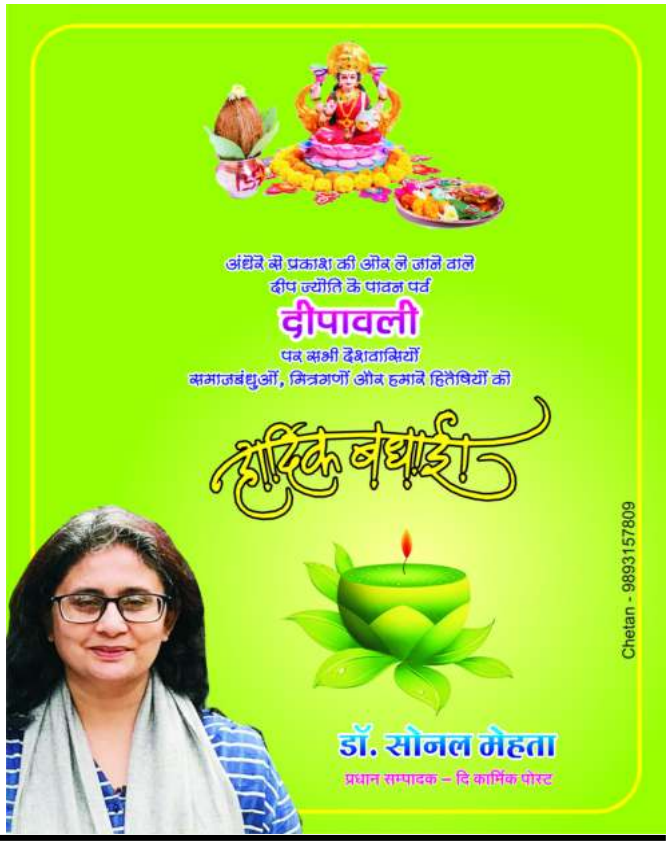

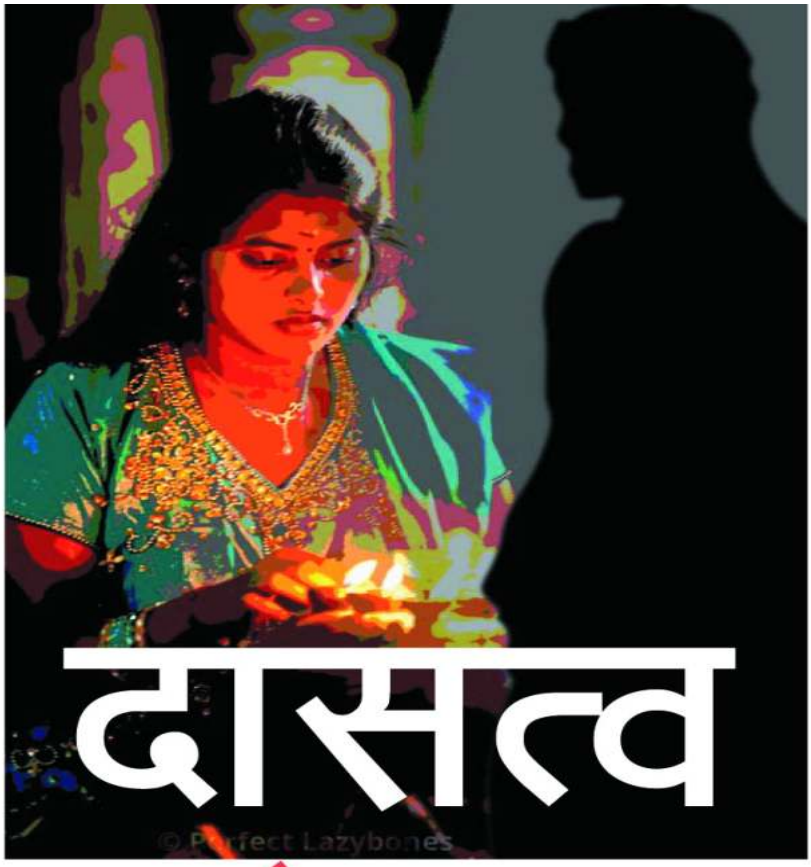

दासत्व के उत्सव

खरी-खरी

■ मनीषा

पिंजरे में जन्मे पक्षी को खुले आसमान में उड़ना संदेहास्पद लगता है। विलियम मोरिस ने इसी बात को यूं कहा था, कोई आदमी इतना भी अच्छा नहीं हो सकता कि वह किसी का मालिक बन जाए। करवा चौथ के बाद अहोई अष्टमी और दिवाली के बाद भाई दूज, छठ। एक के बाद एक पुरुषों के लिए होने वाली पूजाएं। औरतें पूरे जोश-ओ खरोश से जुटी हैं। परंपराओं के दबाव और रूढ़ियों का बोझ उन्हें उबाऊ नहीं लगता। वे तरह-तरह के कुतर्क से जिन्हें न्यायोचित ठहराने में जुटी रहती हैं। मजे की बात तो यह है कि पुरुषों को देवतातुल्य ठहराने वाली परंपराओं को लेकर पुरुष, स्त्री से बहुत ज्यादा संदीजा रहते हैं। वे फौरन बचाव की मुद्रा में आ जाते हैं। तरह-तरह के बेहुदा तर्क देकर रूढ़ियों को सही ठहराते हैं। औरत को दूसरे दर्जे पर धकेलने वालों की घिसी-पिटी दलीलें बड़ी तरतीब से इसको पुख्ता करती हैं। वे निहायत ढीठता से बार-बार स्त्री को इसके कवच में ढकेलने में जुटे रहते हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार राहुल वात्स्यायन अपने लेख- दिमागी गुलामी में वर्षों पूर्व लिख गए हैं, अपने प्राचीनकाल के गर्व के कारण हम अपने भूत के स्नेह में कड़ाई के साथ बंध जाते हैं और इससे हमें उत्तेजना मिलती है कि अपने पूर्वजों की धार्मिक बातों को आंख मूंदकर मानने के लिए तैयार हो जाएं। बेशक, शीर्ष पर बैठने का सुख भोंगने वाला पुरुष क्यों चाहेगा कि स्त्री उसके समकक्ष बैठे। जिस भक्ति से स्त्रियां अपने पति परमेश्वर को दीप-धूप दिखा कर पूजती हैं, उसे वे त्यागने का प्रलोभन कैसे छोड़ सकते हैं। वे इसे प्रेम और समर्पण का कलेवर देने से भी नहीं चूकते। हालांकि वे भूल जाते हैं कि सारे समर्पण का दायित्व हमेशा स्त्री पर ही आता है। पुरुष कभी स्त्री को नही पूजता। यहां कन्या पूजन की बात नही कर रही मैं। इस्लाम मां के कदमों में जन्नत मानता है लेकिन जब बात बीवी की आती है तो वहां भी वही दुभात। वे भी शौहर को मजहबी खुदा कहते हैं।

स्त्री को कमजोर बनाये रखने की साजिश का यह बड़ा हथियार है। उसके जहन में बेहद तरतीब से यह बिठाया जाता रहा है कि उसे वही करना है, जो समाज यानी पुरुषों की मुट्ठी में रहें। हैरत होती है, नयी स्त्री खुद को इन चोंचलों से मुक्त नहीं कर पा रही। वह बेहद कंडीशन्ड तरीके से वही सब दोहरा रही है, जो उसकी दादी/नानियां करती रहीं हैं। वे रूढ़ियों को उत्सव का मुलम्मा चढ़ाकर सिर झुकाये निभा रही हैं। उनमें जरा भी इस बात का मलाल नहीं है कि वे दासता की जंजीरों से मुक्त हों। दासत्व का गुमान करने में उन्हें कोई उकरास नहीं होती। दरअसल उन्हें अहसास ही नहीं है कि वे दासता को जीने को मोहताज हैं। मर्दवाद उन्हें बार-बार फुसला कर, दुलरा कर इसी दासत्व में बांधे रखने की मशक्कत करता रहता है। ऐसा नहीं है कि ग्रामीण या पिछड़े इलाकों में ही ऑनर किलिंग होती है। इज्जत के नाम पर बड़े शहरों व समृद्ध परिवारों में भी औरतों की लगभग यही स्थिति है। उन्हें जान से हाथ धोना पड़ता है या दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल बाहर किया जाता है। औरतों के लिए तय पैमाने मर्दाना है। उन्हें पुरुषों ने बनाया है, अपनी सहूलियत के लिए। बाइबल में लिखा है, कड़ी मेहनत करो और लीडर बन जाओ, सुस्त बन कर गुलाम बने रहो। यहां चेतना की सुस्ती की बात कर रही हूं मैं। विचारशीलता, जागरूकता, समझ की बेहद जरूरत है। यह सब परस्पर है। खासकर अपने समाज में पीढ़ियों के बंधनों और पाबंदियों ने औरतों की सोचने-समझने की आजादी के पंख बुरी तरह कतरें हैं। वे अपने तई सोच ही नहीं सकतीं। मर्दवादी चंगुल से निकली स्त्री बुरी हो जाती है। उसे शऊरदार नही माना जाता। उसके चरित्र को लेकर संदेह किये जाते हैं और उसे हाशिए पर डालने की साजिशें होती हैं। मर्दवादियों का बहुत बड़ा तबका बेहद सलीके से चूड़ी-बिंदी, झुमकों-सिंदूर-आलता के पक्ष में दलीलें देता फिरता है। वह औरतों से ज्यादा बढ़-चढ़कर परंपराओं की दुहाई देता है। विचारहीन पुरुषों का बड़ा तबका रूढ़विादी है, वह खुद धर्मभीरु है, उसे स्त्री की बदली छवि डराती है।

फिल्मों और सीरियलों ने इस जकड़न को बुरी तरह बढ़ाया है। वे वार पर वार करते हैं। जहां विचार करने के लिए जरा स्पेस नहीं छूटता। नयी स्त्री खुद को किसी जगमग करती फिल्म की हीरोइन से कम नहीं आंकतीं। निसंदेह यह उसके आत्मविशवास को बढ़ाने का बेहतर काम करती है लेकिन आकषर्ण का केंद्र बने रहने के लोभ में लीक पीटती फिरती है। सोशल मीडिया ने इस लोभ को और भी हवा दी है। फोटो चस्पांने की नाकही सी प्रतियोगिता में औरतें उलझती चली जा रही है। रंगी-पुती, दुहाइयां देती, अपने देवता पर बारी जाती। सुहाग पर इतराती।

बुरा मनाने की बजाए, वे यह सोचने पर तनिक राजी नहीं कि उनके सुहाग के लिए वे खुद भी कम महत्वपूर्ण नहीं। उनका परमेश्वर कभी भी उन्हें देवी नहीं मानता। ना ही उनकी आरती करते हुए तस्वीर लगा सकता है। सुहागचिन्हों के पक्ष में दलीलें देने वाले ये तथाकथित देवता एकान्त में र साथ जो बर्ताव करते हैं, उसे बार-बार याद दिलाने की जरूरत नही है। वह कुटती है, पिटती है, जलील होती है। उसे बार-बार कमजोर होने का ताना दिया जाता है। वह पुरुषों पर आश्रित है, यह जताने से कोई पीछे नहीं रहते। यह कहने का हौसला उसमें जरा भी नहीं है कि वे इन सबका जरा विरोध कर सके। खांटी मर्दवादी सोच इस सबको समर्पण बताती नहीं अघाती। पुरुषों को समर्पण करने की जरुरत तनिक नहीं महसूस होती। बेशक वे खुद को खुदा मान बैठे हैं। उन्हें गुमान है कि वे औरत की तकदीर लिखते हैं। उसकी मांग का सिंदूर हैं और उसे अपने छत्र-छाया में रखते हैं। वे भूल जाते हैं कि औरत को खतरा पुरुषों से ज्यादा है, जंगली जानवरों की बनिस्पद। वे जब, जहां चाहें स्त्री को रौंदने के लिए स्वतंत्र हैं।

दांपत्व के प्रेम व अपनेपन को रूढ़ियों के चश्मे से देखने वालों द्वारा कुतर्क खूब होते हैं। वे औरतों को तमाम परंपराओं में उलझा देख संतुष्ट होते हैं। उन्हें इत्मिनान होता है कि अन्य झंझटों से स्त्री का ध्यान भटका रहेगा। आमतौर पर पुरुष भी लीक पीटने वाले ही है। दकियानूसी ढकोसलों के प्रति उनके भीतर भी भय बैठा है। वे स्त्री के भरोसे अपने उस डर को जीते रहते हैं। खासकर जब उन्हें देवत्व सरीखा महसूस कराया जाता है तो उनका अहम चरम पर होता है। वे खुद को परिवार, विशेषतया स्त्री का पालनकर्ता मान लेते हैं। उन्हें अपने उस वजूद का गुमान होता है, जिसकी गुलाम स्त्री साफ नजर आती है। पीढ़ियों से चले आ रहे इस मालिक और दास के बर्ताव ने सोचने-समझने पर काई जमा कर दी है। स्त्री ही हर बार पुरुषों के प्रति समर्पित भाव से भावनात्मकता जताती है। कुतर्क करने वाले कभी यह नहीं स्वीकारते कि पुरुषों द्वारा बहन, बेटी, मां या बीवी के लिए इस तरह की पूजा-पाठ क्यों नहीं करते। कृतज्ञता के लिए ही कोई रिवाज होता। पुरुष आश्रयदाता है। वह परिवार का मुखिया और संपत्ति का मालिक है, इसलिए उसे तरह-तरह के रीति-रिवाजों द्वारा लगातार यह महसूस करवाया जाता है। आज जब स्त्री बराबरी के पदों पर काबिज है, आत्मनिर्भर है, अपने वजूद का अहसास है उसे, फिर भी उसका साहस दरक जाता है। वह उत्सव, उल्लास व आत्मसंतुष्टि की आड़ में वही दोहरा रही है, जो उसकी पिछ्ली पीढ़ियां करने को मजबूर थी। उत्सवप्रियता पर कोई संदेह नहीं परंतु दोयम बने रह कर हर बार मर्दवादी जकड़न के आगे नाक रगड़ने को जायज ठहराना कतई उचित नहीं। रूढ़ियां तब्दील नहीं होती, मानसिकता व विचार परिस्कृत होते हैं, वे नजर भी आने चाहिए। ■

एक कदम आत्मनिर्भरता की ओर

महिलाएं गाय के गोबर से बना रहीं ईको फ्रेंडली दीपक

भोपाल

शहर के बरखेड़ी अहीर मोहल्ला में राधाकृष्ण मंदिर के पास दीपावली के लिए गाय के गोबर से ईको फ्रेंडली दीपक समेत, लक्ष्मी, गणेश और गोवर्धन की प्रतिमाएं और धार्मिक चिन्ह ओम, स्वास्तिक शुभ-लाभ और तोरण आदि बनाए जा रहे हैं। खास बात यह है कि इको फ्रेंडली दीपक और प्रतिमाएं बनाने की शुरुआत यहां की रहवासी कांता यादव ने की। बाद में उनके साथ मोहल्ले की अन्य महिलाएं भी इस काम में शामिल हो गईं। इन महिलाओं ने दीपों के त्योहार पर गाय के गोबर से बने दिए से उजाला करने का प्रयास किया है। पर्यावरण संरक्षण और धार्मिक नजरिए से शुभ गाय के गोबर से कमाई का रास्ता निकाला है। ये महिलाएंगाय के गोबर से ईको फ्रेंडली दीपक तैयार कर रही हैं।

कांता बताती हैं कि लॉक डाउन के दौरान जब सभी व्यवसाय बंद थेऔर परिवार की आर्थिक स्थिति गड़बड़ाने लगी थी, तब जैसे तैसे काम चल गया परंतु आगे क्या करेंगे। इस चिंता के चलते आत्म निर्भर बनने का मन में संकल्प किया तब गोबर व धूप से अगरबत्ती बनाना शुरू की। इसमें सफलता मिली गाय के गोबर से दीपक बनाने का विचार आया। लोगों को दीपक पसंद आए तो उनकी साथी महिलाओं ने उन्हें प्रतिमाएं और धार्मिक चिन्ह बनाने का सुझाव दिया। उनके पति की मदद से प्रतिमाओं के लिए सांचा तैयार कराया गया। इसके माध्यम से प्रतिमाओं को आकार दिया जाने लगा।

चीनी दीयों से पर्यावरण को होता है नुकसान

रेमा यादव ने कहा कि दीयों को बनाने में जुटी एक महिला ने कहा कि हम न सिर्फअपनी परंपरा से जुड़े हैं। बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी फायदा पहुंचा रहे हैं।साथ ही पर्यावरण को भी नुकसान से बचा रहे हैं। महिला ने कहा कि गाय का गोबर हमारी परंपरा में पवित्र माना जाता है। और ये कुछ समय में स्वतः नष्ट हो जाता है, जिससे पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचता। वहीं चीनी दीयों से पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचता है।

दीपक से बन सकती है खाद

गाय का गोबर पवित्र माना गया। इससे दीपावली पर घर को शुद्ध करने के लिए आंगन में लीपा भी जाता है। गाय के गोबर के इस दीपक और प्रतिमाओं को गलाकर वापस खाद के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं।

गोबर में लकड़ी का बुरादा मिलाकर बनाते हैं दीपक

कांता यादव ने बताया कि गौ शालाओं से गाय का गोबर मंगाकर उसमें लकड़ी का बुरादा मिला कर उसको महीन पीसने के बाद सुखाते हैं। बाद में इसमें गोंद व थोड़ा पानी मिला कर इन्हें सांचे में डाला जाता है। इसके बाद प्रतिमा को सुखा कर उस पर हर्बल कलर व वाटर कलर करते हैं। उनका कहना है कि पूजा के कुछ दिन बाद गाय की इन प्रतिमाओं व दीपों को गमले में रख कर पानी डाल कर इन्हें गलाकर खाद बनाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि दीयों की कीमत एक से 4 रुपए तक डिजाइन वाले 8 रुपए प्रति नग, प्रतिमाएं 251 प्रतिमाओं के केवल मुखौटे 101 शुभ-लाभ चिन्ह 50 रुपए में दिए जा रहे हैं।

दिवाली पर दीयों से ऐसे सजाएं अपना घर, चारों तरफ फैल जाएगी रोशनी

भोपाल ।

रोशनी का त्योहार कहे जाने वाले दिवाली के त्योहार को हम अपने घर को रंगोली से लेकर जलते हुए दीयों से सजाते हैं। यही ऐसा त्योहार जिसे घर जगमगा जाता है। ऐसे में सिर्फ दीयों को घर के बाहर बेतरतीब तरीके से रखने की जगह उन्हें सही तरीके और डेकोरेट करके रखा जाए तो खूबसूरती कई गुना बढ़ जाती है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं दिवाली पर कैसे दीयों रखकर सजाए अपना घर।

दीयों को टांग दें आप घर को सजाने में जितनी क्रिएटिविटी दिखाएंगे घर उतना ही निखरेगा और खूबसूरत भी लगेगा। इसके लिए आप को सब कुछ मार्केट से ही लेने की जरूरत नहीं है। आप चाहें तो घर में रखी पुरानी टिन या फिर हर साल करवा चौथ के मौके पर खरीदी जाने वाली छलनी का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। टिन या छलनी के बाहर वाले हिस्से को पेंट करके उसे लिविंग रूम में एक दूसरे से जोड़कर टांग दें। इसके बाद इनमें दीयों को लगा दें। इससे घर जगमगा जाएंगा। घर पर चारों तरफ रोशनी भी फैल जाएगी।

दीयों पर पेंट और कलर कर चमचमा जाएगा दीपक कम पैसों में ज्यादा डेकोरेशन के लिए आप मिट्टी के दीये लेकर उन्हें सजा सकते हैं। इसके लिए आप उन पर मन मुताबिक कलर पेंट कर उसमें सीसे और दूसरी चीजों से डेकोरेट कर जलाकर घर को जगमगा सकते हैं। इसके लिए आपको कही भी आसानी से मिलने वाले मिट्टी के दीये खरीदनें होंगे। आप उन्हें अपनी पसंद के लाल, पीला, नीला, सुनहरे रंगों में रंगे और अपनी क्रिएटिविटी दिखाएं। इससे आप को अच्छा लगने के साथ ही घर भी जगमगा उठेगा। आप चाहें तो घर को ज्यादा बेहतरीन दिखाने और सजाने के लिए इस आइडिया का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए आप को छोटे-छोटे शॉर्ट गिलासेज का इस्तेमाल कर सकते हैं। आप घर में आसानी से मिलने वाले इन गिलासेज के अंदर आप चाहें तो छोटे-छोटे टी-लाइट वाले दीये रख दें और फिर इन्हें फूलों से सजाकर बेहतरीन तरीके से लिविंग रूम को डेकोरेट कर लें। घर में मौजूद वाइन गिलास को उलटा कर दें उसके अंदर कुछ फूल भर दें और उल्टी साइड पर दीया रख दें। इसे भी यह बहुत ही अच्छे लगेंगे।

बच्चे और दिवाली के पटाखे

यही है जिंदगी

■ क्षमा शर्मा

दिवाली आ रही है। शाम के वक्त जब इन दिनों अंधेरा जल्दी हो जाता है, अकसर बच्चों के चले पटाखों की धूमधाम सुनाई देती है। हालांकि इन्हीं दिनों बताया जा रहा है कि दिल्ली की हवा चार गुनी अधिक प्रदूषित हो चुकी है। कोरोना के समय में यह और भी खतरनाक है। पटाखों के खिलाफ अभियान चलाए जा रहे हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री ने पटाखे चलाने पर एक लाख रुपया जुर्माना लगाने की भी घोषणा की है। लेकिन बच्चे तो बच्चे ठहरे। उन्हें न तो किसी कानून के बारे में मालूम होता है। न उनकी उम्र ही होती है उन्हें जानने की। वैसे भी लम्बे समय से वे घरों में बंद हैं। करें तो क्या करें। शाम के वक्त पार्क में आते हैं। कुछ दोस्त इकट्ठा हो जाते हैं। दिवाली का मतलब बच्चों के लिए फुलझड़ी और पटाखे ही रहा है। उन्हें इस तरह से अकेले अकेले पटाखे चलाते देख, चिंता होती है और एक पुरानी घटना को याद कर सिहर उठती हूं।

दशकों पहले एक मित्र पास में ही रहती थी। दिवाली आकर गुजर चुकी थी। शाम को जब दफ्तर से घर लौट रही थी, तो उन्हें गेट पर खड़े देखा। रुककर बातें करने लगी। वह बहुत उदास लगी तो कारण पूछा। उनके

दो बेटे थे। दोनों छोटे ही थे। उन्होंने बताया कि उनका छोटा बच्चा दिवाली के दिन पटाखे चला रहा था। एक पटाखा चलाने पर नहीं चला तो उसने उसे जेब में रख लिया। वह सिंथेटिक कपड़े की कमीज पहने हुआ था। पटाखा जेब में ही फट गया और आग लग गई। आग लगते ही कमीज बदन पर चिपक गई। बच्चा बुरी तरह से जल गया। वह अस्पताल में था। और वह वहीं जा रही थी। उस बच्चे का सालों तक इलाज चला, तब कहीं जाकर वह ठीक हो पाया।

सिर्फ पटाखों से ही नहीं दिवाली के दीपों और जलती मोमबत्तियों से भी आग लगने का खतरा रहता है। इसलिए इनसे भी बच्चों को दूर रखें।

इसीलिए जब बच्चे अकेले पटाखे चलाते हैं तो मन परेशान हो उठता है। पहली बात तो यही है कि माता-पिता बच्चों को पटाखे चलाने के खेल से दूर करें। ऐसा नहीं हो पा रहा है, तो कम से कम जब वे पटाखे-फुलझड़ियां चला रहे हों तो उनके आसपास ही रहें, जिससे कि अगर की दुर्घटना होने भी लगे तो बच्चों को समय पर बचाया जा सके। इसके अलावा दिवाली से पहले और उसके बाद कोशिश करें कि बच्चों को सूती कपड़े ही पहनाएं। आग जैसी आपदा से उन्हें सूती कपड़े बचा सकते हैं। सूती कपड़ों में आग जल्दी जो नहीं लगती। सिर्फपटाखों से ही नही दिवाली के दीपों और जलती मोमबत्तियों से भी आग लगने का खतरा रहता है। इसलिए इनसे भी बच्चों को दूर रखें। एक मित्र की मां की साड़ी ने एक दिए से ही आग पकड़ ली थी। वह इतनी बुरी तरह जली थी कि कुछ दिन बाद उनका निधन हो गया था। तब से जैसे ही दिवाली आती है, वह मित्र इस घटना को याद करके परेशान हो उठती हैं। यह भी याद रखने की बात है कि बहुत- से अस्पतालों में दिवाली के अवसर पर आग से होने वाली दुर्घटनाओं से निपटने के लिए अलग से तैयारी की जाती है। स्पेशल वार्ड बनाए जाते हैं। यानि कि आग से जलने की घटनाएं बहुत होती हैं। दिवाली प्रकाश का पर्व है। उल्लास का त्यौहार है। अपने घर और समाज की समृद्धि की पूजा है। किसी काम में विघ्न न पड़े, इसलिए लक्ष्मी के साथ गणेश जी की आराधना भी है।

ऐसे में हमारी जरा सी असावधानी हमारे बच्चों और हमें किसी मुसीबत में धकेल सकती है। उल्लास और त्यौहार के आनंद को चिंता और दुःख में बदल सकती है। इसलिए किसी दुर्घटना से खुद भी बचें, अपने बच्चों और परिवार को भी बचाएं। इस दिवाली को, अपने अड़ोसी-पड़ोसियों और रिश्तेदारों के साथ खूब धूमधाम से मनाएं।

अयोध्या

राम के स्वागत में दुल्हन जैसी सज रही

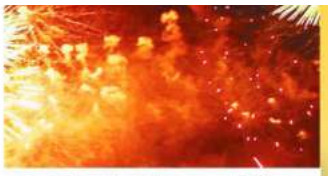

अयोध्या । अयोध्या में जश्न का माहौल है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद रामजन्म भूमि पर मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। अब यहां भव्य मंदिर का निर्माण भी शुरू हो गया है। खुशी इस बात की भी है इस साल वे अपने आराध्य की जन्मभूमि पर वर्चुअल रूप से ही सही अपनी खुशियों के दीप जला सकेंगे। इस दोहरी खुशी के मौके को खास करने के लिए दीपोत्सव (11 से 13 नवम्बर) अयोध्या को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है। पूरी अयोध्या इसकी तैयारियों में जुटी है। जहां देखो काम हो रहा है।

रामनगरी की सीमा में घुसते ही तोरणद्वारों का क्रम जारी हो जाता है। रामायण के प्रसंगों के अनुसार इनकी सजावट को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इसमें से कुछ तो अलग-अलग फूलों से सजाए जाएंगे। दीपोत्सव के दौरान अयोध्या रोशनी से नहा उठे इसके लिए हर खंभे, हर फूल, गली, मोहल्ले, चौराहों, घाट और मन्दिरों की भव्य लाइटिंग की जा रही है। दीपोत्सव के दिन जहां-जहां कार्यक्रम (लक्ष्मण, सीता सहित प्रभु श्रीराम का आगमन, भरत से मिलने की जगह, राजतिलक और राम की पैड़ी आदि) होने हैं उनकी सजावट को नायाब बनाने की तैयारी है। इस बात का हरसंभव प्रयास होगा कि दीपोत्सव के दिन दोपहर तीन से रात के आठ बजे तक चलने वाले सभी कार्यक्रमों में एकरूपता दिखे। इस क्रम में मुख्य कार्यक्रम स्थलों के बैकग्राउंड एक जैसे होंगे। तिलकोत्सव, राजतिलक, सरयू आरती के दौरान वेदपाठी ब्राह्मण अवसर के अनुसार जब मंत्रपाठ करेंगे तो पूरी अयोध्या में सिर्फ वही धुन सुनाई देगी। पूरे कार्यक्रम का बड़ी-बड़ी स्क्रीन और स्क्रीन लगे वाहनों से सजीव प्रसारण होगा। तकनीक के जरिए इसे देश-दुनिया के रामभक्त इस खुशी में शामिल हो सकेंगे।

इस बार योगी सरकार का अयोध्या में यह चौथा दीपोत्सव है। अन्य दीपोत्सवों की तरह इसमें भी दीपकों के मामले में रिकॉर्ड बनाने की तैयारी है। इस बार का दीपोत्सव को बेमिसाल उत्साह के साथ मनाने की योजना है। कोविड 19 का पालन करते हुए अयोध्या में इस बार 5 लाख 51 हजार दिए जलाकर नया रिकॉर्ड बनाया जा रहा है। पिछले साल गिनीज बुक में दर्ज 4.14 लाख दीप जलाने का अपना ही रिकॉर्ड अयोध्यावासी तोड़ेंगे। इसके लिए अवध विभिन्न के छात्र-छात्राओं को जिम्मेदारी दी गई है। दीपोत्सव को यादगार बनाने के लिए पूरी अयोध्या को सजाया जाएगा। इस आयोजन को व्यापक बनाने के लिए पार्षदों का भी सहयोग लिया जाएगा। महानगर के अलग-अलग वार्डों में दीपक जलाने और साज-सज्जा की कार्रवाई जाएगी। इसे ड्रोन कैमरे से देखा जाएगा। जिस वार्ड की सजावट सबसे खूबसूरत होगी उसे वार्ड के पार्षद को शासन-प्रशासन द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत किया जाएगा।

दीपोत्सव के दिन दोपहर तीन से रात के आठ बजे तक चलने वाले सभी कार्यक्रमों में दिखेगी एकरूपता

कोविड 19 का पालन करते हुए अयोध्या में इस बार 5 लाख 51 हजार दिए जलाकर नया रिकॉर्ड बनाया जा रहा है

अपर मुख्य सचिव सूचना नवनीत सहगल ने बताया कि अयोध्या में आयोजित होने वाले दीपोत्सव कार्यक्रम में एकरूपता होगी। जो भी अयोध्या में सजावट हो रही है उसकी ड्रोन मैपिंग होगी। जिस वार्ड की साज-सज्जा सबसे अच्छी होगी उसे पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा दीपोत्सव की खासियत यह होगी कि हम डिजिटल दीपावली का कांसेप्ट लांच कर रहे हैं। इसके जरिए ऑनलाइन लोग अयोध्या के कार्यक्रम में शामिल हो सकेंगे।

तिलकोत्सव, राजतिलक, सरयू आरती के दौरान वेदपाठी ब्राह्मण अवसर के अनुसार जब मंत्रपाठ करेंगे तो पूरी अयोध्या में सिर्फ वही धुन सुनाई देगी।

पूरे कार्यक्रम का बड़ी-बड़ी स्क्रीन और स्क्रीन लगे वाहनों से सजीव प्रसारण होगा। तकनीक के जरिए इसे देश-दुनिया के रामभक्त इस खुशी में शामिल हो सकेंगे।

नई दिल्ली । दिवाली के समय आसमान में धुंध छाने और लाखों लोगों को सांस लेने में तकलीफ होने को देखते हुए अब इस त्योहार को उत्साह के साथ-साथ सार्थकता से मनाने के बारे में सोचने का समय आ गया है। इस समस्या का हल कुछ नवोन्मेषकों ने 'सीड क्रैकर्स' के रूप में निकाला है। इन्हें जलाने से प्रकाश और आवाज नहीं निकलती बल्कि फूल, फल और सब्जियां निकलती हैं। इसे बनाने वाले 'सीड पेपर इंडिया' के संस्थापक रोशन रे ने दिल्ली में हर साल बढ़ते प्रदूषण और इससे सांस लेने में होने वाली तकलीफ के बारे में पढ़ने के बाद सोचा कि इसके लिए लोगों की मानसिकता बदलने की जरूरत है। बेंगलुरु के रहने वाले रे ने एजेंसी से कहा, 'जब लोग पटाखों के बारे में सोचते हैं, तो जलाना, धुआं निकलना और शोर ही दिमाग में आता है। हमें यह मानसिकता बदलने की जरूरत है कि पटाखों को जलाने की जरूरत नहीं है बल्कि उन्हें अलग-अलग पौधों के रूप में उगाया भी जा सकता है। हमें यह समझने की जरूरत है कि हम पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना भी जश्न मना सकते हैं।' रे के 'रॉकेट' गैंदा के फूल, 'बिजली बम' औषधीय तुलसी के पौधे और 'हाइड्रोजन बम' रसदार टमाटर में बदल जाते हैं। उन्होंने कहा कि इन 'सीड क्रैकर्स' को 'सुतली बम', 'हाइड्रोजन बम' और 'अनार' जैसे पटाखों का रूप दिया गया है, लेकिन ये फटते नहीं हैं। ये विभिन्न पौधों के रूप में उगते हैं।

'सीड क्रैकर्स' को जलाने से प्रकाश और आवाज नहीं निकलती बल्कि फूल, फल और सब्जियां निकलती हैं

शुभ मुहूर्त-दीपावली,14 नवंबर 2020

व्यापारिक प्रतिष्ठान, शोरूम, दुकान, गद्दी की पूजा, कुर्सी की पूजा, गल्ले की पूजा, तुला पूजा, मशीन-कंप्यूटर, कलम-दवात आदि की पूजा का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त अभिजित- दोपहर 12 बजकर 09 मिनट से आरम्भ हो जाएगा। इसी के मध्य क्रमशः चर, लाभ और अमृत की चौघडियां भी विद्यमान रहेंगी जो शायं 04 बजकर 05 मिनट तक रहेंगी।

गृहस्थों के लिए श्रीमहालक्ष्मी के पूजन का श्रेष्ठ मुहूर्त और प्रदोषकाल

सायं 5 बजकर 24 मिनट से रात्रि 8 बजकर 06 तक प्रदोषकाल मान्य रहेगा। इसके मध्य रात्रि 7 बजकर 24 मिनट से सभी कार्यों में सफलता और शुभ परिणाम दिलाने वाली स्थिर लग्न वृषभ का भी उदय हो रहा है। प्रदोष काल से लेकर रात्रि 7 बजकर 5 मिनट तक लाभ की चौघड़िया भी विद्यमान रहेगी। यह भी मां श्रीमहालक्ष्मी और गणेश की पूजा के लिए श्रेष्ठ मुहूर्तों में से एक है। इसी समय परम शुभ नक्षत्र स्वाति भी विद्यमान है जो 8 बजकर 07 मिनट तक रहेगा। सभी गृहस्थों के लिए इसी समय के मध्य में मां श्रीमहालक्ष्मी जी की पूजा-आराधना करना श्रेष्ठतम रहेगा।

अतिशुभ मुहूर्त निशीथ काल

जप-तप पूजा-पाठ आराधना तथा विद्यार्थियों के लिए माँ श्री महासरस्वती की वंदना करने का समय रात्रि 8 बजकर 06 से 10 बजकर 49 तक रहेगा। ईष्ट साधना तथा तांत्रिक पूजा के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त महानिशीथ काल घर की नकारात्मक ऊर्जा दूर करन वाली मां श्री महाकाली, प्रेत बाधा से मुक्ति दिलाने वाले भगवान श्रीकाल भैरव की पूजा, तांत्रिक जगत तथा ईस्ट साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त महानिशीथ काल का आरंभ रात्रि 10 बजकर 49 मिनट से आरंभ होकर मध्य रात्रि पश्चात 1 बजकर 31 मिनट तक रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008